जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष -५९ अंक - ०५
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक :१००) रु०
आजीवन -१०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

वैशाख-ज्येष्ठ : सम्वत् २०७४ वि० मई – २०१७

स्मृति शेष
पं० शिवनन्दन प्रसादजी वैदिक

आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ

दिनांक ५ अप्रैल २०१७ को ''रामनवमी पर्व'' आर्य समाज कलकत्ता, १९, विधान सरणी में मनाया गया। कार्यक्रम का आरम्भ यज्ञ के द्वारा किया गया, इसके पश्चात् एक गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें वक्ता थे पं० आत्मानन्द शास्त्री, पं० कृष्णदेव मिश्र एवं पूर्व प्रधान मनीराम आर्य। इस कार्यक्रम का सफल संचालन मन्त्री श्री दीपक आर्य ने किया। वक्ताओं द्वारा मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के दिव्य चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उनके जीवन को दृष्टान्त मानकर उससे प्रेरणा लेने की आवश्यकता पर जोर दिया। श्री मनीराम आर्य ने वाल्मीकि रामायण की घटनाक्रमानुसार विस्तारपूर्वक व्याख्या से सबका मन मोह लिया और अपने ओजस्वी वाणी से राम की सार्थकता की प्रस्तुत की। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रधान श्री सुरेश चंद जायसवाल, मन्त्री श्री दीपक आर्य सहित सभी अधिकारीगण सक्रिय थे।

आर्य संसार के सम्बन्ध में घोषणा

फार्म-४

प्रेस तथा पुस्तक पंजीयन अधिनियम १८६७ (१९५६ में संशोधन धारा १९डी०) के अन्तर्गत अपेक्षित आर्य संसार नामक पत्रिका से संबंधित और अन्य बातों का विवरण प्रकाशित किया जाता है।

१. प्रकाशन स्थान	आर्य समाज कलकत्ता १९, विधान सरणी, कोलकाता-७००००६
२. प्रकाशन अवधि	मासिक
३. प्रकाशक का नाम और राष्ट्रीयता	राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, भारतीय
४. सम्पादक का नाम और पता	राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, भारतीय १९, विधान सरणी, कोलकाता-७००००६
५. मुद्रक का नाम, राष्ट्रीयता और पता	एसोशियेटेड आर्ट प्रिन्टर्स, भारतीय ७/२, बिडन रो, कोलकाता-६
६. पत्रिका के मालिक का पूरा नाम पता	आर्य समाज कलकत्ता १९, विधान सरणी, कोलकाता-७००००६

मैं राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपरोक्त विवरण सत्य है।

१५ मार्च २०१७
कोलकाता

राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
प्रकाशक

ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ५९ अंक — ०५
वैशाख-ज्येष्ठ २०७४ वि०
दयानन्दाब्द १९३
सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११८
मई — २०१७

आद्य सम्पादक
प्रो० उमाकान्त उपाध्याय
(स्मृति शेष)
●
सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
सहयोगी संपादक :
श्रीमती सरोजिनी शुक्ला
श्री सत्यप्रकाश जायसवाल
पं० योगेशराज उपाध्याय
●

शुल्क : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

इस अंक की प्रस्तुति

१. आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ		२
२. इस अंक की प्रस्तुति		३
३. छिद्र पूर्ति (५२)	वेद-वीथिका से	४
४. स्वामी जी का स्वकथित जीवन-चरित्र	पं० लेखराम द्वारा संकलित	७
५. पं० शिवनन्दन प्रसादजी वैदिक		११
६. वायरल-बैक्टेरियल एवं संक्रमित रोगों की रोकथाम में आयुर्वेदिक यज्ञथैरेपी का वैज्ञानिक चिन्तन	आचार्य (डा०) श्वेतकेतु शर्मा	१२
७. वेदों में कोई लौकिक इतिहास नहीं	खुशहाल चन्द्र आर्य	१७
८. सत्यार्थ प्रकाश काव्य सुधा (महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश का काव्यानुवाद)	पं० देवनारायण तिवारी	२०
९. शिक्षित माता मही समान उदार	डॉ० अशोक आर्य	२३
१०. गायत्री-मन्त्र	मृदुला अग्रवाल	२५

आर्य समाज कलकत्ता
१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६
दूरभाष : २२४१-३४३९ ***email : aryasamajkolkata@gmail.com***

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा।

छिद्र पूर्ति

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसोवाति तृण्णं बृहस्पतिर्मे तद् दधातु ।

शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ।। यजु० ३६-२

शब्दार्थ :-

यत्	= जो	में	= मेरे
छिद्रम्	= छेद, पाप के प्रवेश का मार्ग	चक्षुषः	= आंख का
हृदयस्य	= हृदय का	मनसः	= मन का
अतितृण्णम्	= दरार, निर्बलता	बृहस्पतिः	= बृहस्पति
तद्	= उसे	दधातु	= पूरा भर दें
शम्	= कल्याण	नः	= हमारा
भवतु	= होवे	भुवनस्य	= संसार का
यस्पतिः	= जो पालक है		

भावार्थ :-मेरे चक्षु हृदय और मन में जो छेद, जो दरार हैं, उन्हें बृहस्पति पूर दें, भर दें । संसार का पालक परमेश्वर हमारे लिए कल्याण करें ।

विचार विन्दु :

१. चक्षु हृदय मन में छिद्र का अभिप्राय ।

२. छिद्रों से हानि पर विचार ।

३. बृहस्पति कौन है ?

४. भुवनपति भगवान् से प्रार्थना क्यों ?

व्याख्या

किसी भी मनुष्य में केवल अच्छाई ही, अच्छाई नहीं होती। कुछ न्यूनतायें भी रहती हैं । ये त्रुटियां हमारे जीवन के छिद्र हैं। इन्हीं छिद्रों से जीवन का पतन करने वाले दोष और पाप हमारे जीवन में प्रवेश कर जाते हैं ।

प्रस्तुत मंत्र में परमेश्वर से प्रार्थना है कि हे जगदीश्वर ! मेरे चक्षु, मन और हृदय में जो छिद्र या जो दरार हैं, कृपा करके उन्हें आप दूर कर दें । चक्षु आंख, कान, नाक आदि बाह्य उपकरणों के प्रतीक हैं। मन बुद्धि, चित्त आदि अन्तःकरणों के प्रतीक हैं और हृदय हमारी भावना, श्रद्धा, निष्ठा का प्रतीक है। कभी-कभी कई लोगों को बुरी बातें देखने, बुराई का चिन्तन करने और हृदय में बुरे कामों के प्रति

श्रद्धा हो जाती है । यहीं है छिद्र हो जाना । परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे हमारे इन छिद्रों को भर दें, ताकि हम बुराइयों से बचे रहें ।

संसार में दो तरह की योनियां हैं । एक तो मनुष्य की योनि है जो भोग-योनि भी है और कर्म योनि भी है और मनुष्य के अतिरिक्त पशु-पक्षियों की योनियां केवल भोग-योनियां हैं । वे कर्म करके या अपने कर्मों को सुधार कर अपना उत्थान नहीं कर सकते । जीवन का सुधार और उत्थान मनुष्य योनि का एकाधिकार (Monopoly) है ।

जीवन का निर्माण और जीवन का उत्थान, अपनी चेतना विद्या और बुद्धि का विकास मनुष्य जीवन का ही विशेषाधिकार है । अन्य प्राणी इस अधिकार से वंचित हैं । मनुष्य की भी इन्द्रियों में जब छिद्र दोष आ जाते हैं तो वह जीवन के उत्थान का विशेषाधिकार खो देता है ।

एक नीति के श्लोक में कहा गया है -

'पञ्चेन्द्रियस्य मर्त्यस्य छिद्रं चैदेकमिन्द्रियम् ।
ततोऽस्य स्त्रवतिप्रज्ञा दृतेः पात्रा दिवोदकम् ।।'

मनुष्य मरण-धर्मा प्राणी है । उसकी एक-एक इन्द्रियां एक-एक छिद्र हैं । जैसे मशक में छिद्र हो जाने पर सारा पानी बूंद-बूंद करके चू जाता हैं, वैसे ही इन्द्रियों में छिद्र हो जाने से मनुष्य की बुद्धि, प्रज्ञा सब नष्ट हो जाती है और जिसकी बुद्धि ही नष्ट हो गई उसका सर्वनाश तो निश्चित ही है । कभी एक शराबी होश खो कर सड़क की नाली में गिर पड़ा । उसे कै भी हो गई और कहीं से भटकता हुआ एक कुत्ता वह कै खाने-चाटने लगा । और कै चाटते-चाटते शराबी के मुंह में लगी कै चाटने लगा और शराबी ने बड़े प्यार से उसे अपनी बाहों में भर लिया-प्यार किया । ठीक ही कहा है - 'शराबी का मुंह कुत्ता चाटे' ।

'जिन विषयन संतन तजी मूढ़ ताहि लपटात ।
मानुष डारत वमन करि श्वान स्वाद सो खात ।'

जीवन की बड़ी भारी सच्चाई हैं जीवन में एक भी छिद्र आया और जीवन का सत्यानाश हो गया। कहते हैं -

'दशाननो काममयो महाद्रमः' । और

'दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः' ।

रावण बड़ा भारी पण्डित था, दशग्रीव था, दश बुद्धिमानों की जितनी अकेले की बुद्धि थी, लेकिन कामी था और सोने की लंका ही नहीं नष्ट हुई, इन्द्र को जीतने वाला पुत्र मेघनाद भी मारा गया, कुम्भकर्ण जैसा बहादुर भाई मारा गया, पाप तो केवल दशानन का था । इसी तरह दुर्योधन बड़ा ईर्ष्यालु था और उसकी ऐसी प्रबल ईर्ष्या थी कि वह पाण्डवों को फूटी आंख भी नहीं देख सकता था । वह पाण्डवों को आधा राज्य क्या, पांच गाँव भी देना नहीं चाहता था । श्रीकृष्ण से उसने कह दिया था कि सूई की नोंक भर भी भूमि बिना युद्ध के नहीं दूंगा और इसका कुफल हुआ कि सारे कुल का नाश हो गया । साथ

ही भारतवर्ष जैसे उन्नत देश का भी पतन हो गया । युधिष्ठिर भी कुछ कम तो न थे । एक बार जुआ खेला और सब कुछ हारे दूसरी बार फिर खेला और बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास लेकर हटे । जीवन के छिद्र ऐसे ही होते हैं ।

यह संसार है - संसरति - चलता ही रहता हैं । **यह तारक भी है** यदि मनुष्य मनुष्य की तरह सोच कर रहे, मननशील बनकर रहें तो यह तार भी देता हैं और **मारक भी है** जो बिना सोचे समझे पशुओं की तरह जीवन बिताते हैं उनको यह संसार यहीं डुबो देता हैं ।

मंत्र में भगवान् बृहस्पति से प्रार्थना हैं कि आप हमारे छिद्रों को, हमारी खामियों को, न्यूनताओं को पूर्ण कर दें । बृहस्पति-गुरुदेव-आचार्य को भी कहते हैं और परमेश्वर के पश्चात् हमें ज्ञान देने वाले और हमारे दोषों को दूर करने वाले गुरुदेव बृहस्पति ही हैं । संसार का पालक और ज्ञानदाता तो परमेश्वर हैं ही । गुरुदेव भी बृहस्पति हैं ।

मंत्र में अंतिम प्रार्थना यह है कि इस संसार के पालक प्रभु हमारे लिए कल्याणकारी हों, हमें ज्ञान, कर्म, मनन और श्रद्धा से भर कर हमारा कल्याण कर दो । हमें विश्वास हो जाये कि -

'के शत्रवः सन्ति निजेन्द्रियाणि'-हमारी स्वछन्द इन्द्रियां ही हमारी सबसे बड़ी शत्रु हैं और संयम हो जाने पर यही मित्र हो जाती हैं ।

हम बृहस्पति परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं । प्रार्थना करने से अभिमान घटता है हममें नम्रता आती है और हमारे छिद्र, हमारी न्यूनताएं समाप्त होने लगती हैं ।

●

।। ओ३म् ।।

आर्य समाज कलकत्ता की व्यवस्था में पं० वेद प्रकाश शास्त्री द्वारा बंगाल में वेद प्रचार

१. ०४.०४.२०१७ से ०५.०४.२०१७ नान्दाभाङ्गा ग्राम में (सागरद्वीप) रामनवमी पर — यज्ञ तथा सत्संग ।

२. ०५.०४.२०१७ को आर्य समाज ब्राह्मणखाली २४ परगना सागर में सत्संग ।

३. ०६.०४.२०१७ से ०७.०४.२०१७ को धसपाड़ा सागर २४ परगना में रामनवमी उपलक्ष्य में वृहद्यज्ञ तथा प्रवचन ।

आगामी कार्यक्रम

१. ११.०४.२०१७ को आर्य समाज कुदी, एगरा, पूर्व मेदिनीपुर में प्रचार (वार्षिकोत्सव) ।

२. १८.०४.२०१७ से २१.०४.२०१७ तक आर्य समाज जामनगर झाड़खण्ड में वार्षिकोत्सव पर प्रचार ।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जीवन वृत्त

अध्याय–१

ठाकुरों पर प्रभाव

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी को गुजरात में संवत १८८१ में हुआ था । पूरे भारतवर्ष में स्वामी जी का जन्म दिवस मनाया जाता है इसी अवसर पर आर्य समाज कलकत्ता ने निर्णय किया कि पं० लेखराम द्वारा संकलित एवं आर्य महामहोपदेशक कविराज श्री रघुनन्दन सिंह निर्मल द्वारा अनूदित महर्षि स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र धारावाहिक प्रकाशित किया जाय, इसी शृंखला में प्रस्तुत है यह धारावाहिक जीवन-चरित्र — सम्पादक

(गतांक से आगे)

स्वामी जी के उपदेश से प्रभावित ठाकुर, स्वामी जी एकान्तवास के अभ्यासी – अचरौल के जागीरदार ठाकुर रणजीत सिंह की साधुओं से बहुत प्रीति थी । स्वामी जी से मिलने से पहले वह राधाकृष्ण को मानते और उन्हीं का भजन किया करते थे । बीकानेर राज्य के ग्राम लोंच निवासी एक ठाकुर हमीरसिंह किसी मुकदमे में यहां जयपुर में आये थे । वे स्वामी जी से पूर्ण परिचित थे और मूर्ति पूजा से घृणा करते थे । हमीर सिंह ने ठाकुर रणजीत सिंह साहब की इस पूजा का खंडन किया, जिस पर ठाकुर साहब ने कहा कि फिर हम क्या करें और किसको गुरु करें । वह चूंकि स्वामी जी से मिल चुका था, इस कारण उसने कहा कि एक साधु गोविन्द दास या नन्दराम के बाग में उतरे हुए हैं, आप उनको मिलें और उनसे उपदेश लें । जयपुर के ठाकुर साहब स्वामी जी की चर्चा सुन चुके थे । इसलिए ठाकुर हमीर सिंह जी की सम्मति से ठाकुर रणजीत सिंह जी स्वामी जी से मिले । उन्होंने दूसरे दिन पंडित रूपराम जोशी को मझोली सहित स्वामी जी को लिवा लाने भेज दिया । स्वामी जी निमन्त्रण स्वीकार करके पैदल चले आये और ठाकुर साहब से वार्तालाप किया और भोजन भी वहीं किया । वार्तालाप और प्रश्नोत्तर से ठाकुर साहब के बहुत से सन्देह निवृत्त हो गये और मूर्तिपूजा से मन को पूर्ण घृणा हो गई । अन्त में उन्होंने प्रार्थना की कि जब तक आप रहें, यहीं रहे । स्वामी जी ने स्वीकार किया और सच्चिदानन्द को भेजकर अपना सब सामान वहां मंगा लिया । चार दिन तो ठाकुरसाहब के महलों में रहे । उसके पश्चात् ठाकुरसाहब के बाग में जो बदनपुरी में गंगापोल द्वार के बाहर है । पधार गये,क्योंकि स्वामी जी ने कहा था कि हम एकान्त में रहना चाहते हैं । वहाँ पक्के घर तो विद्यमान थे परन्तु ठाकुरसाहब ने स्वामी जी की इच्छा के अनुसार वहाँ एक और कच्चा घर छप्पर डलवाकर बारहदरी के प्रकार का बनवा दिया । वहां नित्य नगर के कई विद्यार्थी स्वामी जी के पास पढ़ने को जाने लगे और ठाकुर साहब भी नित्य प्रति स्वामी जी के पास जाकर मनुस्मृति, छान्दोग्योपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद् आदि श्रवण किया करते थे ।

जयपुर में चार मास ठहरे । उपनिषदों की कथा और मूर्तिपूजा का खण्डन करते थे । हृदय में ईश्वर का ध्यान करने का उपदेश देते थे । भगवा कपड़ा पहनते थे — हीरालाल जी कायस्थ माथुर, भूतपूर्व कामदार ठाकुर साहब अचरौल, जिनकी आयु अब इस समय ६२ वर्ष की है, कहते हैं कि मैं उन दिनों मद्यपान किया करता था । मैं मद्य पिये हुए उस गंगापोल बाग में गया । जैसे ही उस बंगले के पास से जाने लगा ठाकुर साहब की स्वामी जी को बुलाने की बात याद आ गई । किसी से मैंने पूछा कि स्वामी जी जो आये हुए हैं वे कहाँ उतरे हैं ? पता मिलने पर सीधा स्वामी जी की सेवा में चला गया । दूर से जाकर दण्डवत् की और वहीं बैठ गया । उस समय स्वामी जी मनुस्मृति का प्रायश्चित्त अध्याय बांच रहे थे । प्रकरण यह था कि गोहत्या, स्वर्णचोरी, सुरापान आदि का यह दण्ड है । जब सुरापान का दण्ड उन्होंने पढ़ा और उसका अर्थ समझाया तब मैंने अपने मन में बहुत खेद माना और अपने भूतकाल पर पश्चाताप करने लगा । उसी समय मन विरक्त हो गया और निश्चय किया कि भविष्य में ऐसा कदापि नहीं करूँगा । उस दिन के पश्चात् प्रतिदिन घर से भ्रमण के बहाने सवार होकर जाता और वहाँ सीधा उनकी सेवा में उपस्थित हो जाता था । माँस और मदिरा मैंने उनके उपदेश से त्याग दिये । वह सम्भवतः चार मास यहाँ रहे थे । उस समय भगवा कपड़ा (कौपीन) पहनते थे । उन्होंने दसों उपनिषद् ग्रन्थ बम्बई से यहाँ मंगाये थे और उनकी कथा किया करते थे और गीता का भी उपदेश करते थे और उसका भाष्य लोगों को सुनाते थे । मूर्तिपूजा का खंडन करते और कहते थे कि परमात्मा तो हृदय में है । हृदय में परमात्मा का ध्यान करो मूर्तिपूजा अच्छी नहीं है । स्वामी जी ने ठाकुर साहब को सन्ध्या-गायत्री का उपदेश दिया और कहते थे कि साधारण ब्राह्मण लोग आपको बहकाते हैं । उस समय देवीभागवत की पुराणों में गणना करते और कृष्णभागवत का खंडन करते थे । एकपत्रा भागवत के खंडन में छपवाया भी था । कृष्ण जी के विषय में जो कलंक भागवत में थे, उन सबका खंडन करते थे और श्रीमद्भागवत का अपना बनाया हुआ खंडन लोगों को सुनाया करते थे । हीरालाल जी से पूछा कि तुम्हारा यज्ञोपवीत हुआ है ? उन्होंने कहा कि नहीं । तब यह मन्त्र सिखलाया था —

''ओ३म् भूर्भुवः स्वः। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव ।''

फिर उसने यमुना पर जाकर यज्ञोपवीत धारण किया, तब गायत्री याद की । स्वामी जी के उपदेश से ठाकुर साहब ने मूर्तिपूजा छोड़ दी । एक पर्चा तत्वबोध[१] का ठाकुर साहब को और एक हीरालाल को दिया । उनके जाने के पश्चात् मैंने (हीरालाल के) उस तत्वबोध के दो पृष्ठों की प्रतिलिपि अपनी पुस्तक में उतार ली (देखने पर विदित हुआ कि वे पर्चे संवत् १९२३, चैत्र शुक्ल ५, बुधवार के लिखे हुए अर्थात् नकल किये हुए हैं ।)

वेदान्त और निराकार शिव का उपदेश, सन्ध्या व गायत्री का जप करना ही उपासना बताते थे–इन दिनों स्वामी जी वेदान्त का उपदेश देते और निराकार परमात्मा को शिव नाम से बतलाया करते थे । पार्वती के पति शिव की कोई चर्चा न थी, प्रत्युत उसके विरोधी थे । रुद्राक्ष और भस्म भी पहनते और लगाते और दूसरों को उपदेश भी करते थे । उपासना का प्रकार लोगों के लिए सन्ध्या गायत्री बताते थे।

---

१. सम्भवतः यह 'तत्वबोध-शीर्षक' विज्ञापन पत्र भागवत के खण्डन का ही हो — सम्पादक

कपटियों ने महाराजा को स्वामी जी से दूर रखा

शिव के पुजारी व्यासों ने स्वामी जी की वाग्मिता से स्वार्थ सिद्ध करना चाहा, परन्तु उनके मूर्तिमात्र का खण्डन करने के आग्रह से वे सतर्क हो गये — इन्हीं दिनों महाराजा रामसिंह जी वैष्णवों और शैवों का शास्त्रार्थ करा रहे थे । वे शैवमत अर्थात् शिवलिंग की स्थापना और अन्य मूर्तियों का खंडन करते थे । व्यास बख्सीराम और उनके भाई धनीराम व्यास इस काम के अधिष्ठाता थे । व्यास जी जानते थे और देख चुके थे कि स्वामी दयानन्द सरस्वती विद्या में बहुत पूर्ण हैं क्योंकि जयपुर के समस्त पंडितों से पहले ही शास्त्रार्थ हो चुका था । व्यास जी ने अपने अन्तःकरण में विचार किया कि यदि स्वामी दयानन्द सरस्वती हमारे पक्ष में हो जावें तो फिर किसी प्रकार की शंका न रहे । ऐसा विचार कर व्यास जी के पास गये और अपने कार्यानुकूल वार्तालाप करके लौट आये । महलों में आकर महाराजा रामसिंह जी से स्वामी जी का समाचार कहा । महाराजा साहब ने कहा कि ठाकुर रणजीत सिंह द्वारा स्वामी जी को महलों में बुलाया जाये और सरदार रणजीत सिंह ने भी जाने की (स्वामी जी को) सम्मति दी तब स्वामी जी ने स्वीकार किया । प्रातःकाल बख्सीराम व्यास ने अपने छोटे भाई धनीराम व्यास को भेजा। स्वामी जी ने कहा कि अच्छा हम दस बजे आवेंगे । फिर पीनस की सवारी में स्वामी जी गये और राजराजेश्वर के मन्दिर में जाकर बैठे परन्तु वहाँ स्वामी जी ने मूर्ति को नमस्कार न किया । बख्शीराम व्यास ने आकर कहा कि अब मैं महाराज से पूछता हूँ । इसी समय किसी मनुष्य ने बख्शीराम व्यास से यह कह दिया कि यह तो प्रत्येक प्रकार की मूर्ति को उखाड़ना चाहते हैं । यदि तुम इनका यहाँ प्रवेश करा दोगे तो तुम्हारा सारा कार्य भ्रष्ट करा देंगे और महादेव-वादेव को उठवा देंगे । कुछ तो उसने उनके मन्दिर में आते ही देख लिया था कि उन्होंने नमस्कार नहीं किया, इस पर उसे और भी सन्देह हुआ। महाराजा साहब के पास तो गये नहीं प्रत्युत साधारण रूप से भीतर जाकर और बाहर आकर कह दिया कि महाराजा साहब तो कहीं भ्रमण को गये हैं, आप फिर पधारना । तब स्वामी जी ने कहा कि हमारा महाराजा से क्या प्रयोजन है । उसी समय पीनस में बैठकर लौट आये और सरदारों से सब वृत्तांत आकर कहा । सरदारों ने उत्तर दिया कि चूंकि उनका मूर्तिपूजा में विशेष आग्रह है । इसलिए आपसे छुपा लिया । कुछ मनुष्यों के मुख से विदित हुआ कि स्वामी जी प्रथम दिन गये तो अवकाश न होने का बहाना किया फिर दूसरे दिन गये तो भ्रमण का बहाना कर दिया । तीसरे दिन स्वामी जी को उनके कपट का वृत्तांत विदित हुआ तब महाराज ने कहा कि अब कुछ भी हो, हम नहीं जावेंगे । ग्रीष्म ऋतु में आये थे और शीतकाल के अन्त में गये । उन्हीं दिनों और भी कई जागीरदारों को स्वामी जी से भक्तिभाव उत्पन्न हो गया । इस प्रकार चार मास पन्द्रह दिन स्वामी जी ने जयपुर में निवास किया । उन दिनों स्वामी जी चार वेद, मनुस्मृति और दस उपनिषदों को मानते थे ।

वे व्याकरण में पूरे थे, शुरू ही खण्डन-मण्डन खूब करते थे – पंडित गोपीनाथ जी, नांगलिया दायमा ब्राह्मण संस्कृत पाठशाला जयपुर के अध्यापक ने इसके अतिरिक्त यह भी बताया कि उन दिनों वह रुद्राक्ष का कंठा पहनते और भभूत लगाते थे । केवल एक चौड़ी कौपीन पहनते थे । ठाकुर साहब के वह यज्ञोपवीत के गुरु थे । वह व्याकरण में पूरे थे । सिद्धान्त कौमुदी को अशुद्ध बतलाते और अष्टाध्यायी और महाभाष्य को शुद्ध कहते थे । हम केवल दर्शनार्थ गये थे । यह भी कहते थे कि पंडितों से हमारा शास्त्रार्थ कराओ । उन दिनों उनकी व्याकरण की खूब धूमधाम थी क्योंकि वे एक सुप्रख्यात

गुरु से शिक्षा प्राप्त कर चुके थे । वे खंडन-मंडन में कुछ आर्यसमाज के कारण से प्रसिद्ध नहीं हुए प्रत्युत उस समय भी वह जहाँ जाते ऐसा ही करते थे । उस समय वे केवल सिद्धान्त कौमुदी आदि ग्रन्थों का खंडन करते थे । महाराजा रामसिंह जी को उनसे मिलने की इच्छा थी । प्रथम तो इस बात पर आग्रह होता रहा कि स्वामी जी के घर पर राजा साहब आवें या स्वामी जी उनके महलों में जावें । परस्पर अत्यन्त आग्रह होता रहा अन्त में अचरौल के ठाकुर साहब के कहने से स्वामी जी वहाँ गये परन्तु राजा साहब महलों के भीतर चले गये जिस पर स्वामी जी क्रुद्ध होकर लौट आये और फिर नहीं गये । उन्हीं दिनों ठाकुर इन्द्रसिंह रईस दूदू, स्वामी जी को अपने यहाँ ले गये और दो दिन वहाँ रखा । उपदेश लिया और उनके शिष्य हुए । जब वे स्वामी जी को अचरौल के ठाकुर साहब के पास लौटा कर लाये तो ठाकुर साहब का अत्यन्त धन्यवाद किया कि आपने ऐसे महात्मा से मेरा मिलाप करा दिया ।

जयपुर से बगरू दूदू, किशनगढ़ तथा पुष्कर होते हुए अजमेर पधारे – सारांश यह कि स्वामी जी चार मास जयपुर में निवास करके चैत्र के कृष्णपक्ष में यहां बैलगाड़ी में बगरू गये और वहां दो दिन रहे।

बगरू में चलकर दूदू में दो दिन ठहरे और रियासत किशनगढ़ में भी दो दिन निवास करते हुए अजमेर में पधारे और राय दौलतराय के बाग में चार दिन रहकर पुष्कर पधारे । क्रमशः.....

(पृष्ठ २७ का शेषांश)

greatest bestower of splended wealth (both material and spiritual) in the form of wisdom (ज्ञान), Peace (शान्ति), and faith (विश्वास) । ''यो दीव्यति दीव्यते वा स देवः'' जो सर्व सुखों का देनेहारा, सर्वत्र विजय करानेहारा, जिसकी प्राप्ति की कामना सब करते हैं ।

''धीमहि'' = धारण करें, परमात्मा का हम ध्यान करें । Meditate upon him. आपकी कृपा से निरन्तर स्वयं के हृदय में आपका ही ध्यान करें, आपको ही धारण करें, जिससे हमारी बुद्धि को आत्मिक ज्ञान प्राप्त हो । ''यः'' = आप, 'जगदीश्वर' जो सविता देव परमात्मा ।

''नः'' = अस्माकम् हमारी ।

''धियः'' = बुद्धियों को सत्य वैदिक ज्ञान की प्रेरणा दें । 'बुद्धी' right intellect.

''प्रचोदयात्'' = प्रेरयेत प्रेरणा करें अर्थात् बुरे कामों से छुड़ाकर उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव में प्रवृत्त करें । Inspire into the best actions, noble virtues and right behaviour or nature.

ऋग्वेद, काण्ड-३, सूक्त-६२, मन्त्र-१० (गायत्री-मन्त्र) :-

भावार्थ :- जो मनुष्य सबके साक्षी पिता के सदृश वर्त्तमान न्यायेश दयालु शुद्ध सनातन सबके आत्माओं का साक्षी परमात्मा की ही स्तुति और प्रार्थना करके उपासना करते हैं उनको कृपा का समुद्र सबसे श्रेष्ठ परमेश्वर, दुष्ट आचरण से पृथक् करके श्रेष्ठ आचरण में प्रवृत्त करा और पवित्र तथा पुरूषार्थयुक्त करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कराता है ।

मोबाईल - ९८३६८४१०१५१ १९, सी सरत बोस रोड़, कोलकाता-२०

P.S. = कई तथाकथित पंडितजन-विद्वान् इत्यादि लोगों ने यह अफवाह फैला रक्खी है कि ''गायत्री-मन्त्र'' का उच्चारण करने का अधिकार सिर्फ साफ-सुथरें स्वच्छ पुरूष-वर्ग का ही है, स्त्रियों व कन्याओं का नहीं । परन्तु यह सरासर मिथ्या वक्तव्य है, क्योंकि ''गायत्री-मन्त्र'' वेदों का सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है एवं वेदों में कहीं नहीं लिखा है कि वेद-मन्त्रों को सिर्फ पुरूष-वर्ग ही उच्चरित कर सकता है ।

पं० शिवनन्दन प्रसादजी वैदिक

पण्डित शिवनन्दन प्रसादजी वैदिक, व्याकरण-तीर्थ, आयुर्वेदरत्न का आर्यसमाज कलकत्ता के साथ पिछले ५४-५५ वर्षों का निरन्तर अटूट सम्बन्ध रहा है । पण्डित शिवनन्दनजी १ जून सन् १९३५ ई० को आर्यसमाज कलकत्ता में पधारे और आजतक वह सम्बन्ध उसी रूप मे अक्षुण्ण बना रहा है ।

पण्डित शिवनन्दनजी के पूर्वज राजस्थान में रहते थे और वहाँ आढ्य सुसम्पन्न सरदार सामन्त थे । किसी कारणवश राजस्थान से चलकर इनके पूर्वज आरा में बस गये । पण्डित शिवनन्दन प्रसादजी सन् १९२४ ई० में दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में अध्ययन करने के लिए गये । यहाँ व्याकरण, निघण्टु और अन्य आर्ष ग्रन्थों के साथ कुरान की भी शिक्षा प्राप्त की । वेदपाठ करने का अभ्यास भी वहीं आरम्भ हुआ । उन दिनों स्वामी स्वतन्त्रतानन्द, स्वामी वेदानन्द, स्वामी अच्युतानन्द और स्वामी सत्यानन्द आदि उच्चकोटि के संन्यासियों का सहयोग इस उपदेशक विद्यालय को प्राप्त था । दो वर्षों तक इन विद्वानों की छत्रछाया में रहकर पण्डितजी ने सिद्धान्तभूषण की उपाधि प्राप्त की । उसके पश्चात् अपनी जन्मभूमि में आ गये। आरा नगर में आर्यसमाज का प्रचार करने लगे । सन् १९३३ ई० में गुरुकुल वैद्यनाथ धाम आये और फिर वहाँ से कलकत्ता आ गये । कलकत्ता में आपका प्रधान कार्य आर्यसमाज का प्रचार करना और आर्य विद्यालय कलकत्ता में अध्यापन करना था ।

सन् १९३६ ई० में जब आर्य विद्यालय कलकत्ता की स्थापना हुई तो स्थापना के दिन १९ जनवरी सन् १९३६ ई० से पं० शिवनन्दन प्रसादजी आर्य विद्यालय के संस्कृत अध्यापक और धर्मशिक्षक के रूप में कार्य करने लगे । आर्य विद्यालय में सन् १९५७ ई० तक, एक लम्बी अवधि तक आपने बड़ी सफलता और यश के साथ अध्यापन कार्य किया ।

पण्डित शिवनन्दन प्रसादजी के जीवन का मूल्यांकन संस्कृत के अध्यापक के रूप में करना अति अल्प है । वास्तव में इनके जीवन का सही मूल्यांकन तो इनका मिशनरी स्वरूप था । पण्डित शिवनन्दन प्रसादजी सुदीर्घ काल तक आर्यसमाज कलकत्ता के साप्ताहिक सत्संग में सत्यार्थ प्रकाश की कथा करते रहे हैं । सत्यार्थ प्रकाश की कथा में रोचकता, शास्त्रीय प्रमाण और सबसे अधिक बढ़कर स्वामी दयानन्दजी के एक-एक अक्षर को समझाना और प्रमाणित करना इनका मुख्य कार्य था ।

कलकत्ता में आज वेदपरायण यज्ञ अपने ढंग से बहुत सुन्दर हो रहे हैं । इस गौरवमय परम्परा के पीछे पण्डित शिवनन्दन प्रसादजी की अतुलनीय तपस्या बहुत बड़ा कारण है । यहां प्रत्येक आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर वेदपारायण यज्ञों की परम्परा को स्थापित करना, उसको सम्पुष्ट करना, उसका प्रचार करना, यह पण्डित जी के जीवन का प्रधान कार्य था। पण्डित जी परम तपस्वी और कर्मकाण्डी विद्वान् थे । बंगाल के कई स्थानों में पण्डितजी यज्ञ कराने जाया करते थे । बंगाल, बिहार और उड़ीसा में आपका वैदिक-याज्ञिक—निष्ठावान् पण्डितों में बड़ा यश था । आप गुरुकुल काउरचण्डी के आचार्य थे । लोकैषणा, वित्तैषणा से पृथक् आजीवन अविवाहित अतः पुत्रैषणा से भी रहित पंडितजी का स्वरूप एक संन्यासी जैसा था । आज से लगभग २१ वर्ष पूर्व आर्य समाज कलकत्ता में ही पं० जी अपना नश्वर शरीर छोड़ कर परलोकवासी हुए ।

वायरल-बैक्टेरियल एवं संक्रमित रोगों की रोकथाम में आयुर्वेदिक यज्ञथैरेपी का वैज्ञानिक चिन्तन

(गतांक से आगे...)

यज्ञ थैरेपी में प्रयुक्त यज्ञशाला, उसमें प्रयुक्त पात्र, स्थान, जल, यज्ञ कुण्ड व वेद मंत्रों के उच्चारण का वैज्ञानिक महत्व

वायरल— बैक्टेरिया एवं संक्रमण रोगों जैसे स्वाइन फ्लू, डेंगू, मलेरिया, वायरल फीवर, प्लेग, टी०बी०, एड्स व चर्मरोग हृदय रोगों की रोकथाम एवं चिकित्सा हेतु यज्ञ थैरेपी में यज्ञ शाला उसमें प्रयुक्त तांबें के पात्र, स्थान, जल, यज्ञकुण्ड तथा वेद मंत्रों के उच्चारण का भी वैज्ञानिक महत्व है ।

यज्ञ थैरेपी से उपरोक्त सभी विन्दु का वैज्ञानिक लाभ प्राप्त होता है ।

यज्ञशाला – यज्ञ थैरेपी में यज्ञशाला अर्थात् वह स्थान जहाँ यह यज्ञ थैरेपी की जाती है, उसको यज्ञशाला कहते हैं, यज्ञशाला चारों ओर से खुली होनी चाहिए व वर्षा आदि से बचाव के लिए छत होनी चाहिए, जिस छत के मध्य में कवर्ड ओपेन चिमनी भी होनी चाहिए ।

यज्ञ थैरेपी के वैज्ञानिक व रासायनिक चिन्तन में स्पष्ट किया जा चुका है कि यज्ञ थैरेपी में निकलने वाली कार्बन डाई ऑक्साइड व कार्बन मोनो ऑक्साइड गैसें जो निकलती हैं उनको वातावरण में व्याप्त करने के लिए भी यह आवश्यक है कि यज्ञशाला खुली होनी चाहिए ।

यज्ञ थैरेपी में तो यज्ञशाला होती है, उसमें यज्ञ करने, जाने व बैठने के सात वैज्ञानिक लाभ हैं, शरीर में पाँच इन्द्रियाँ सबसे अहम मानी जाती हैं देखना, सुनना, स्पर्श करना, गन्ध प्राप्त करना, स्वाद महसूस करना । जब यज्ञ थैरेपी के लिए यज्ञशाला में कोई व्यक्ति या रोगी जाता है, तो शरीर की यह पांचों इन्द्रियाँ क्रियाशील हो जाती हैं ।

१. दर्शन इन्द्रियाँ :- यज्ञ में जब जब यज्ञ थैरेपी को प्रज्ज्वलित करने के लिए कपूर जलाते हैं तब वही ध्यान केन्द्रित होने से कपूर के औषधीय गुण से दर्शन इन्द्रिय या देखने की क्षमता सक्रिय हो जाती है । यह सक्रियता से यज्ञशाला से प्राप्त दर्शन इन्द्रियों को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान होती है ।

२. श्रवण इन्द्रियाँ :- यज्ञ थैरेपी प्रारम्भ होने पर यज्ञ शाला में वेद मंत्रों का सस्वर पाठ प्रारम्भ होने लगता है, विधिवत इस सस्वर पाठ से शरीर के आरोग्य केन्द्र क्रियाशील हो जाते हैं, श्रवण इन्द्रियाँ अर्थात् दोनों कान क्रियाशील होकर यज्ञशाला से प्राप्त होने वाली सकारात्मक ऊर्जा को कर्ण इन्द्रियों से प्राप्त करना प्रारम्भ कर देती हैं, जिससे कानों की प्रतिरोधक क्षमता का स्वतः विकास प्रारम्भ हो जाता है ।

३. स्पर्श इन्द्रियाँ :- यज्ञ थैरेपी में मंत्रों के उच्चारण के साथ जब जल से आचमन प्रारम्भ करते हैं और शरीर को जल के साथ अलग-अलग अंगों को स्पर्श करते हैं, तो हमें अदृश्य स्पर्श ऊर्जा महसूस होती है, यह ऊर्जा इस बात को सुनिश्चित करती है कि हमारी स्पर्श

इन्द्रियाँ क्रियाशील हैं, जिन स्पर्श इन्द्रियों को यज्ञशाला से प्राप्त होने वाली सकारात्मक ऊर्जा को प्राप्त होने लगती हैं ।

४. गंध इन्द्रियाँ :- यज्ञ थैरेपी में सुगन्धित पदार्थ वाली सामिग्री डाली जाती हैं, इसके जलने से हमारी गन्ध इन्द्रियाँ या सूंघने की इन्द्रियाँ सक्रिय हो जाती हैं, जिसमें एक अदृश्य सुगन्धित ऊर्जा प्राप्त होना प्रारम्भ हो जाती है, यज्ञशाला के चारों ओर वातावरण में अग्नि में डाले गये सुगन्धित पदार्थ फैलकर १००० गुना सूक्ष्म हो जाते हैं, जिससे गंध इन्द्रियों को यज्ञशाला से सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है ।

५. आस्वाद इन्द्रियाँ :- यज्ञ थैरेपी के बाद जब ताम्र पात्र के घृत में थोड़ा सा जल डाल कर हाथों में लेकर अग्नि में ताप कर चेहरे पर लगाते हैं, तो शरीर की स्किन इन्द्रिय के स्पर्श से आस्वादन से आस्वाद इन्द्रियाँ क्रियाशील हो जाती हैं तथा ताम्र पात्र के जल को अग्नि में गर्म करके आचमन के रूप में प्रयोग करने पर आस्वाद इन्द्रियाँ क्रियाशील हो जाती हैं, जिससे प्राप्त ऊर्जा शरीर को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती हैं ।

६. यज्ञ शाला में नंगे पैर जाने से वहाँ की जमीन की भी सकारात्मक ऊर्जा पैरों के जरिये शरीर को प्राप्त होती हैं, प्राचीन काल में अशिक्षित व यज्ञोपवोत न धारण करने वाले लोगों को पण्डित लोग यज्ञ न करवाकर केवल यज्ञकुण्ड से थोड़ी दूर पर चारों ओर परिक्रमा करवाते थे बाद में यज्ञ परम्परा के कम होने के कारण मन्दिरों की परिक्रमा अपनायी जाने लगी जो आज भी लोग करते हैं, इसका वैज्ञानिक प्रामाणिक अर्थ यह है कि अनेक प्राचीन यज्ञशाला या मन्दिर ऐसी जगह उच्च स्थानों पर्वतों आदि पर बनाये गये जहाँ पृथ्वी की चुम्बकीय तरंगें घनी हो जाती हैं और इन मन्दिरों के गर्भ ग्रह में में प्रतिमायें ऐसे स्थान पर स्थापित होती हैं, जिनके नीचे तांबे के पात्र रखे हुए हैं जो यह तरंगें अवशोषित करते हैं । यह तरंगे शरीर को ऊर्जा प्रदान करती हैं ।

७. इसी प्रकार यज्ञशाला में तांबे के पात्र का प्रयोग होता है जो व्यक्ति यज्ञशाला में यज्ञ थैरेपी करता है या परिक्रमा लगाता है, तो उस तांबे के पात्र की तरंगों को ऊर्जा के रूप में अवशोषित करता है, यह एक धीमी प्रक्रिया है, परन्तु नियमित करने से रोगी की सकारात्मक शक्ति का विकास होता है ।

वेद मंत्रों से लाभ

१. वेदों के मंत्रों में यह विशेषता है कि उदान्त (उचैरूदात्तः) ऊचे स्वर में बोलने वाले, अनुदात्त (नीचैरनुदात्तः) अर्थात् नीचे स्वर में बोलने वाला स्वर, स्वरित अर्थात् उदात्त अनुदात्त दोनों स्वर एक साथ एक ही स्थान पर आवें उसे स्वरित कहते हैं । यह तीनों स्वर वेद मंत्रों के उच्चारण में प्रयुक्त होते हैं, जो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता व रक्त संचार को व्यवस्थित करते हैं ।

२. वेद मंत्रों के उच्चारण से शरीर में रक्त संचार अनवरत रूप से चलता रहता है ।

३. वेद मंत्रों से सस्वर उच्चारण से हृदयघात Heart Attack नहीं होता है ।

४. वेद मंत्रों के सस्वर पाठ करने पर रक्तवाहिनियाँ Blood Capalaries अवरुद्ध (Block) नहीं होती हैं ।

५. वेद मंत्रों के सस्वर पाठ से मानसिक तनाव नहीं होता है ।

६. वेदमंत्रों के सस्वार पाठ से Brain Haemorrhage नहीं होता है ।

७. वेद मंत्रों के सस्वर उच्चारण से ब्लड प्रेशर (रक्तचाप) न बढ़ता है न घटता है, व्यवस्थित रहता है ।

यज्ञ थैरेपी पर आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों के निष्कर्ष पर स्वाइन फ्लू, डेंगू, मलेरिया, वायरल फ़ीवर, प्लेग, टी०बी०, एड्स, चर्मरोग, पेट के रोगों, टाईफाइड, उर्वराशक्ति, प्रदूषण आदि में लाभ

यज्ञ थैरेपी पर विभिन्न वायरस, बैक्टेरिया आदि जीवाणुओं की रोकथाम एवं उनसे उत्पन्न होने वाले रोगों जैसे स्वाइन फ्लू, डेंगू मलेरिया, वायरल फीवर प्लेग टी०बी० एड्स चर्मरोग आदि से निजाद पाने के लिए आधुनिक वैज्ञानिकों ने अनेकों अनुसंधान किये हैं —

१. एथ्नोफार्माकोलोजी के शोधपत्र (Research Journal of Ethnopharmacology 2007) दिसम्बर २००७ रिपोर्ट के आधार पर फ्रांस के ट्रेले नामक वैज्ञानिक ने यज्ञ थैरेपी पर अनुसंधान करके निष्कर्ष निकाला कि आम की लकड़ी से किये जाने वाली यज्ञ थैरेपी से फार्मिक एल्डिहाइड नामक गैस उत्पन्न होती है जो खतरनाक बैक्टेरिया व जीवाणुओं को मारती है व वातावरण को शुद्ध करती हैं । गुड़ के जलने पर भी यह गैस उत्पन्न होती है ।

२. टौकीन नामक वैज्ञानिक ने यज्ञ थैरेपी पर किये गये अनुसंधान में पाया कि आधे घंटे तक यज्ञ में बैठकर उसकी ऊष्मा से शरीर का सम्पर्क हो तो टाईफाइड जैसे खतरनाक रोग फैलने वाले जीवाणु भी मर जाते हैं व शरीर शुद्ध भी हो जाता है ।

३. राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ के वैज्ञानिकों ने यज्ञ थैरेपी पर अनुसंधान किया और निष्कर्ष में कहा कि यज्ञ से वातावरण शुद्ध होता है और जीवाणुओं का नाश होता है ।

उन्होंने इस निर्णय को प्रभावित करने के लिये वैदिक ग्रन्थों में वर्णित यज्ञ थैरेपी में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न सामग्री का निर्माण करके आम की लकड़ी के साथ यज्ञ थैरेपी को एक कक्ष के अन्दर एक घण्टे तक किया, उसके बाद उन्होंने पाया कि कक्ष के अन्दर बैक्टेरिया का स्तर ९४ प्रतिशत कम हुआ, यही नहीं उन्होंने आगे भी कक्ष को हवा में मौजूद जीवाणुओं का परीक्षण किया तो पाया, कक्ष के दरवाजे खोले जाने व सारा धुंआ निकल जाने के २४ घंटे बाद भी जीवाणुओं का स्तर सामान्य से ९६ प्रतिशत कम था ।

बार-बार परीक्षण करने पर पता चला कि एक बार के धुंए का असर एक माह तक रहता है और उसकी वायु में विषाणु का स्तर ३० दिन के बाद भी सामान्य से बहुत कम था ।

४. राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ ने उपरोक्त परीक्षण के बाद यह भी निष्कर्ष निकाला कि न सिर्फ मनुष्य बल्कि वनस्पतियों व फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले बक्टेरिया व वायरस का भी नाश होता है, जिससे फसलों में रासायनिक खाद का प्रयोग कम हो सकता है ।

५. यज्ञ थैरेपी से पर्यावरण की शुद्धता :— पर्यावरण चार प्रकार से प्रदूषित हो रहा है।

१. रासायनिक प्रदूषण जिसमें नाईट्रोजन, कार्बन, सल्फर ऑक्साइड आदि गैसों से पर्यावरण का प्रदूषण, २. पक्षियों के द्वारा हवा व जल को प्रदूषित करके वातावरण प्रदूषित हो रहा है । ३. सूक्ष्म जीव विज्ञानी प्रदूषण से विकिरण द्वारा ४. मक्खियों एवं जीवों के द्वारा ।

उपरोक्त चारों प्रदूषण पर उ० प्र० प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के विशेषज्ञों के सहयोग से डॉ० मनोज गर्ग, निर्देशक पर्यावरण और तकनीकी सलाहकार के नेतृत्व में वैज्ञानिकों के एक समूह ने गोरखपुर में अश्वमेध यज्ञ के दौरान प्रयोगों का आयोजन किया था इसमें १०० मिली जल व उस परिवेश में एकत्र हवा में से प्रत्येक के नमूनों का विश्लेषण किया जिसके परिणाम स्वरूप जल व वायु प्रदूषण के लिये उच्च मात्रा ए०पी०एस०-४५, सल्फर डाइ ऑक्साइड के स्तर में ७५ प्रतिशत औसत कमी, नाईट्रोजन ऑक्साइड लगभग १० प्रतिशत वायु में कमी तथा पानी में ७० प्रतिशत बैक्टेरिया की कमी दर्शायी गई, यज्ञ की राख में कई खनिज औषधियाँ प्राप्त हुईं ।

६. राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ के सी०एस० नौटियाल व पी०एस० चौहान तथा एशियाड एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन सिकन्दराबाद आन्ध्र प्रदेश के वाई० एन० नेने ने जलती लकड़ियों पर सुगन्धित वनौषधियों का मिश्रण मिलाकर एक घण्टे प्रयोग करने पर देखा कि बैक्टेरिया प्रदूषण में ९४ प्रतिशत की कमी आयी ।

७. यज्ञ थैरेपी में विभिन्न प्रकार की समिधाओं का शरीर पर प्रभाव :— (ए) मदान की समिधा अग्नि में जलाने पर विभिन्न वायरस बैक्टेरिया का नाश करती है । (बी) पलाश की समिधा नकारात्मक ऊर्जा का नाश करती है । (सी) पीपल की समिधा संतति सुख प्रदान करती है । (डी) गूगल व शमी की समिधा फेफड़े रोगों का नाश करती है । (ई) दूर्वा की समिधा शरीर में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती हैं । (एफ) कुश की समिधा मानसिक तनाव को दूर करती है । (जी) शमी की समिधा मानसिक शान्ति व कार्यक्षमता को बढ़ाती है। (एच) आम की समिधा वातावरण में फैले विभिन्न वायरस बैक्टेरिया को निष्क्रिय करती है, चर्म रोगों को दूर करती है, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है ।

८. यज्ञ थैरेपी में प्रयुक्त होने वाले पदार्थों व वनौषधियों का विषाणुओं व शरीर पर प्रभाव :— (ए) केसर, अगर, तगर, चन्दन, इलाईची, जायफल, जावित्री, छडीला, कपूर, कचरी, बालछड़, पानड़ी आदि वस्तुयें अग्नि में जलने पर वातावरण को सुगन्धित करती है, जिससे विभिन्न वायरस बैक्टेरिया स्वतः भाग जाते हैं । (बी) घृत, गुग्गल, सूखी मेवा, जौ, तिल, चावल, शहद, नारियल आदि शरीर को पुष्ट करते हैं व प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। (सी) शक्कर, छुआरा, दाख आदि मीठे पदार्थ मानसिक तनाव को दूर करते हैं । (डी) गिलोय, जायफल, सोमबल्ली, ब्राह्मी, तुलसी, अगर, तगर, तिल, इन्द्रा, जौ, आंवला, माल कांगनी, हरताल, तेजपत्र, प्रियंगु, केसर, सफेद चन्दन, जटामांसी, शंखपुष्पी आदि शरीर के विभिन्न वायरस रोग, जैसे वायरल फीवर, स्वाइन फ्लू, डेंगू आदि को दूर भगाता है ।

९. वायरल वैक्टेरिया एवं संक्रमण रोगों के लिये यज्ञ थैरेपी हेतु हवन सामग्री :-

(ए) वायरल रोगों में वनौषधि से निर्मित सामग्री :- गूगल, सफेद चन्दन, लाल चंदन, अगर, तगर, चिरौंजी, खोपर नारियल, जायफल, लौंग, मुनक्का, किशमिश, छुआरा, बड़ी इलायची, गुलाब के फूल, बड़ी हर्र, गिलोय, साठी के चापल, सहदेव, जटामांसी, सतावर, कूट, ब्राह्मी, आदि वनौषधियों से मिश्रित सामग्री का प्रयोग यज्ञ थैरेपी में करने से वायरल रोगों में लाभ होता है ।

(बी) बैक्टेरियल रोगों में निम्न वनौषधियों का प्रयोग :- सुगन्धवाला गूगल, चन्दन सफेद, लाल चन्दन, अगर, तगर, चिरौंजी, खोप नारियल, जायफल, लौंग, मुनक्का, जटामासी, बादाम, चीड़ का बुरादा, जावित्री, केसर, शहद, शक्कर देशी, किशमिश, छुहारा, इलायची बड़ी, हर्र बड़ी, गिलोय, कपूर कचरी, ब्राह्मी, इन्द्रायण, सतावर, कूट, बिसौटा, कुलंजन, जौ, तिल, चावल, देशी कपूर, देवदारू आदि के मिश्रण से बनी सामग्री का प्रयोग बैक्टेरियल रोगों में यज्ञ थैरेपी के लिये किया जाता है ।

(सी) स्वाइन फ्लू :- डेंगू—मलेरिया आदि रोगों में प्रयुक्त वनौषधियाँ :— क्षीर काकोरी, पाण्डरी, गोखरू, पिस्ता, आँवला, जीवन्ती, पुनर्नवा, खूबकला, मकोय, सुगन्धवाला गूगल, चन्दन सफेद, चन्दन लाल, अगर, तगर, जायफल, लौंग, बड़ी इलायची आदि का मिश्रण सामग्री के साथ स्वाइन फ्लू, डेंगू, मलेरिया आदि रोगों में यज्ञ थैरेपी में प्रयोग करते हैं।

(डी) चर्म रोगों में :- चन्दन सफेद, चन्दन लाल, अगर, तगर, देवदार, नारियल, गुलाब के फूल, खस, केसर, नागर मोथा, जौ, तिल काले, जटामांसी, टेसू के फूल आदि के मिश्रण से युक्त सामग्री का प्रयोग चर्म रोगों मे्ं यज्ञ थैरेपी के द्वारा लाभप्रद रहता है ।

इस प्रकार यज्ञ थैरेपी से विभिन्न रोगों जैसे स्वाइनफ्लू, डेंगू, मलेरिया, वायरल फीवर, प्लेग, टीबी, एड्स व चर्मरोग, हृदय रोग, मानसिक रोगों के लक्षणों को दूर करके शरीर में प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है, प्लेटलेट काउन्ट कम नहीं होते हैं, श्वेत रक्त कणिकायें (W.B.C.) नष्ट नहीं होते हैं, आसपास के वातावरण में घूम रहे वायरल, बैक्टेरिया उस स्थान से दूर चले जाते हैं या बेहोश होकर शरीर को हानि नहीं पहुंचाते हैं, वनौषधियों से युक्त सामग्री के प्रयोग से विभिन्न रोगों से लड़ने की सामर्थ्य प्राप्त होती है शरीर में हृदय, मस्तिष्क व फेफड़े आदि की प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है, मानसिक तनाव दूर होता है ।

उपसंहार

भारतीय ऋषि मुनियों के वैदिक सिद्धांतों पर प्रतिपादित **''वायरल बक्टेरियल व संक्रमण रोगों की रोकथाम में आयुर्वेदीय यज्ञ थैरेपी का वैज्ञानिक चिन्तन''** आज मानवीय मूल्यों की शारीरिक चिकित्सा का महत्वपूर्ण आवाहन है । यह सिद्धांत भले ही भौतिकतावादी समाज की विचारधारा के विपरीत अवश्य लग रहा हो परन्तु यज्ञ का वैज्ञानिक दर्शन व आयुर्वेदीय वनस्पति चिकित्सा का वैज्ञानिक स्वरूप का प्रस्तुतिकरण से स्पष्ट है कि आज स्वाइन फ्लू, डेंगू, मलेरिया, वायरल फीवर, एड्स, चर्मरोगों, हृदय रोग, फेफड़े रोगों की रोकथाम, बचाव व समूल नष्ट करके उसके लक्षणों से दूर करने का वैज्ञानिक साधन अवश्य हो सकता है ।

आइये इस वैज्ञानिक सिद्धांत को समझ व समाज को इसके उपयोग हेतु प्रेरित करें ।

०१/१२, केला बाग, सावित्री सदन, बरेली (उ०प्र०)

।।ओ३म्।।

''वेदों में कोई लौकिक इतिहास नहीं''

– खुशहाल चन्द्र आर्य

वेदों के अनेक पदों से यह भ्रम होता है कि उनमें ऐतिहासिक स्त्री-पुरुषों, ऋषि-मुनियों, नगरों, नदियों, पर्वतों के नाम है, जिन्हें देखकर प्रायः विद्वान् कह देते हैं कि वेदों में लौकिक इतिहास है । पाश्चात्य संस्कृतज्ञ ही नहीं वेदों को स्वतः प्रमाण मानने वाले भारतीय वेद भाष्यकार सायणाचार्य आदि भी वेदों में लौकिक इतिहास को स्वीकार कर लेते हैं । ऐसा वेद के शब्दों को रूढ़ि मान बैठने से होता है । जबकि वास्तव में वे सभी आचार्यों के मत में यौगिक हैं । कालान्तर में उनके अर्थ विशेष में सीमित हो जाने पर वे रूढ़ होने लगे । वेदों में अनित्य इतिहास अर्थात् किसी व्यक्ति या जाति विशेष का उल्लेख नहीं है । ईश्वरीय ज्ञान का प्रादुर्भाव मानव उत्पत्ति के साथ ही होता है, अतः उसमें मानव इतिहास नहीं हो सकता है, क्योंकि इसके पूर्व मानव उत्पत्ति नहीं होने से इतिहास सृजित ही नहीं हुआ था । सृष्टि के आदि में जब ज्ञान का एकमात्र आधार वेद ही था और मनुष्यों के व्यवहार की एकमात्र भाषा वैदिक भाषा थी, तब मनुष्यों द्वारा रक्खे गये पदार्थों के नाम वैदिक नामों से भिन्न कैसे हो सकते थे ।

इस विषय में मनु महाराज लिखते हैं कि :—

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक् ।
वेद शब्देभ्य एवादो पृथक् संस्थाश्च निर्ममे ।। (मनु० २।२९)

सृष्टि के आदि में ज्ञान देते समय परमेश्वर ने सब पदार्थों के नाम कर्म आदि बता दिये । उन्हीं नामों का लोग प्रयोग करने लगे । यौगिक प्रक्रियानुसार वैदिक शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ हो जाते हैं । इस प्रकार से लोक में नाम आये, लोक से वेद में नहीं गये । वेद का इन ऐतिहासिक व्यक्तियों से कोई सम्बन्ध नहीं है ।

वेद में लौकिक इतिहास मानने पर वेद को अनित्य मानना पड़ेगा, इससे ईश्वर में भी पक्षपात की सिद्धि होगी । यौगिक प्रक्रिया अनुसार अर्थ होने पर वेद का कोई भी शब्द व्यक्ति या स्थान विशेष का वाचक नहीं रहता । जहाँ ऐसा होता है, वस्तुतः वहाँ प्राकृतिक जगत् के कारण तथा कार्यरूप तत्वों का औपचारिक वा अलंकारिक वर्णन होता है । इस विषय में मीमांसा भाष्यकार शबर स्वामी लिखते हैं । यह इतिहास जैसा प्रतीत होता है (वास्तव में है नहीं) यदि इतिहास माना जाये तो वेद को आदि अथवा अनित्य मानना पड़ेगा । परन्तु ऐसा नहीं है ।

वेदों में लौकिक इतिहास लेशमात्र भी नहीं है :- इस तथ्य को स्थापित करने का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती को जाता है । वेद में अर्जुन, द्रौपदी, राम, कृष्णा, सीता आदि ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम, गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियों के नाम, अयोध्या नगर आदि नाम अवश्य पाये जाते हैं, परन्तु वेद में हम लौकिक नामों से किंचित् मात्र भी सम्बन्ध नहीं है । वेद के सभी शब्द यौगिक है, आदिकाल में संस्कृत के समस्त नामपद यौगिक अर्थात् धातुज माने जाते थे । धात्विक अर्थों के अनुसार

प्रकरणानुसार इनका अर्थ भिन्न हो जाता है ।

उदाहरणार्थ :- ''यो वायुना यजति गोमतीषु'' (ऋ० ४।२९।५) अर्थात् — जो वायु द्वारा गोमती में होम करता है ।

''सरस्वती या पितरो हवन्ते'' (ऋ० २०।२७।९) अर्थात् — उस सरस्वती को जिसमें पितर हवन करते हैं ।

उपर्युक्त ऋग्वेद के दोनों मन्त्रों में गोमती और सरस्वती नदियों के नाम नहीं है, अपितु यज्ञ और हवन से सम्बन्ध रखने वाले नाम हैं । इसलिए स्पष्ट ही वे किरण के बोधक हैं ।

अम्बे, अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।। (यजु० २३।१८)

इस मन्त्र में वर्णित अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका तीनों महाभारत के काशीराज की कन्याएँ नहीं है, जिन्हें भीष्म उठा ले गये थे । अपितु यहाँ अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका माता, दादी और परदादी के वाचक है ।

वैदिक काल में महाराज मनु के वंशजों ने सरयू नदी के तट पर अयोध्या नगरी का निर्माण किया था, वेद के शब्द से ही उसका नाम रखा था ।

''अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या ।'' अथर्व० २०।२।३२

इस मन्त्र में शरीर को ही देवताओं की नगरी बताया है जिसमें आठ चक्र और नौ द्वार है ।

नवद्वारे पुरे देही (गीता) अर्थात् जिसमें देही (आत्मा) निवास करता है । इससे ज्ञात होता है कि वेदादि शास्त्रों में शरीर रूपी नगरी का नाम अयोध्या है ।

''कृष्णायाः पुत्रोऽर्जुन'' अथर्व० १३।३।२६

वेद के इस मन्त्र में अर्जुन को द्रौपदी (कृष्णा) का पुत्र बताया है ।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ''रात्रिवैकृष्णा, असावादित्यज्ञस्या वत्सौऽर्जुनः'' यहाँ वेद और ब्राह्मण ग्रन्थ दोनों में कृष्णा (द्रौपदी) नाम रात्रि का है और उससे उत्पन्न होने के कारण आदित्य अथवा दिन (अर्जुन) उसका पुत्र है ।

इस प्रकार यहाँ द्रौपदी (रात्रि) और अर्जुन (दिन) को महाभारत की द्रौपदी और अर्जुन का वाचक नहीं माना जा सकता ।

उपर्युक्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि वेद में अनित्य इतिहास अर्थात् किसी व्यक्ति या जाति विशेष का उल्लेख नहीं है । जिस वेदार्थ से वेद में लौकिक इतिहास का संकेत मिलेगा वह वेद की मूल भावना का द्योतक होगा । वेद से भिन्न अन्य धार्मिक ग्रन्थों में लौकिक इतिहास, भूगोल पाया जाता है । इसलिए उन्हें ईश्वरीय रचना नहीं कहा जा सकता है । उदाहरणार्थ :-

बाइबल — बाबुल के राजा नबुखुद नजर के राज्य के उन्नीसवें बरस के पांचवें मास सातवी तिथि में बाबुल के राजा का एक सेवक नबूसर अद्दान जो निज सेना का प्रधान अध्यक्ष था । यरूसलम में आया और हर एक बड़े घर को जला दिया । (तौ० रा० प० २५। आ० ८-१०)

कुरान — जबं युसूफ ने अपने बाप से कहा कि ऐ बाप मेरे ! मैंने एक स्वप्न देखा ।

(मं० ३।सिं० २२।सू०२२।आ० ४-५९)

हमने इस कुरान को अरबी में नाजिल किया है, ताकि तुम समझ सको ।

(मं०३।सि०२३।सू०२३।आ०३७,४०) (सूरते युसूफ आ० १)

दूसरी आयत से लगता है कि खुदा का कुरान उतारने का मुख्य उद्देश्य केवल अरब वासियों का सुधार करना था । अरबी भाषा निश्चित रूप से एक देश विशेष की भाषा है । देश-विदेश की भाषा में ईश्वरीय ज्ञान देने से ईश्वर पर पक्षपात का आरोप लग सकता है । परन्तु न्यायकारी परमपिता परमेश्वर ने वेद रूपी ज्ञान संस्कृत भाषा में प्रदान किया जो मूलरूप से सबकी भाषा थी ।

बाइबल और कुरान में लौकिक इतिहास के अनेक उदाहरण मिलते हैं । जबकि हम कह सकते हैं कि वेदों में लौकिक इतिहास नहीं है ।

यहाँ यह बात समझने की है कि इस लेख में रूढ़ और यौगिक शब्द कई बार आये हैं । इनके क्या अर्थ हैं यह हमको जानना उचित है । रूढ़ या रूढ़ि शब्द का अर्थ है, जैसा शब्द है उसका वैसा ही अर्थ लगा लेना और यौगिक शब्द का अर्थ होता है, उसके आगे-पीछे के प्रकरणानुसार अर्थ लगाना जिसके काफी अर्थ निकल सकते हैं । वेदों में अधिकतर यौगिक शब्दों का ही प्रयोग हुआ है । उनका भाष्यकारों ने रूढ़ि अर्थ लगा लिया, इसी से अर्थ का अनर्थ हुआ है ।

दूरभाष : ०३३-२२१८-३८२५ C/o गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
मोबाईल : ९८३०१३५७९४ १८०, महात्मा गाँधी रोड, २ तल्ला, कोलकाता-७

(पृष्ठ २२ का शेषांश)

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे ।
यो भूतः सर्वस्येश्वरो यस्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठितम् ।।११।।

अथर्ववेद काण्ड ११ सूक्त ४, मं० १

५.छन्द- तात्पर्य लिखने में हमारा इन प्रमाणों का यही ।
ओंकार आदि प्रसिद्ध नामों से ग्रहण होता वही ।।
जो पूर्व इसके भी लिखा है और लिखता हूँ पुनः ।
कोई अनर्थक नाम होता है नहीं प्रभु का सुना ! ।।१५।।
होते दरिद्री, किन्तु धनपति आदि उनके नाम हैं ।
यों व्यर्थ में ही इस तरह के नाम बहु बदनाम हैं ।।
परब्रह्म के जो नाम हैं वे व्यर्थ के होते नहीं ।
कार्मिक कहीं, गौणिक कहीं, औ सहज वाचक हैं कहीं ।।१६।।
सार्थक सभी प्रभु नाम हैं, हैं अर्थ भी सबके सही ।
जो अर्थ घटता है जहाँ है नाम भी वैसा वही ।।
वह ब्रह्म रक्षक विश्व का है इसलिए वह ओ३म् है ।
सर्वत्र व्यापक सब समय आकाशवत् ''खं ब्रह्म है'' ।।१७।।

मो०: ९८३०४२०४९६

क्रमशः...

सत्यार्थ प्रकाश काव्य सुधा

(महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश का काव्यानुवाद)

– पं० देवनारायण तिवारी 'निर्भीक'

श्री पं० देवनारायण तिवारी — आर्य समाज के उपदेशक और विद्वान् कवि हैं, इनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिसमें ३ महाकाव्य हैं। पं० जी ने सत्यार्थ प्रकाश का छन्दबद्ध भावानुवाद किया है। आर्य समाज कलकत्ता ने इसे आर्य संसार मासिक पत्र में धारावाहिक रूप से प्रकाशित करने का निश्चय किया है।

यह द्वितीय कड़ी आपके समक्ष है। — सम्पादक

अथ प्रथम समुल्लास

ओ३म् शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा ।
शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः ।।
नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि ।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि,
सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु ।।
अवतु माम् । अवतु वक्तारम्, ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।१।। तैत्तिरीय उपनिषद्-१

१.छन्दः-(ओ३म्) यह ओ३म् नाम परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम कहाता है ।
अ, उ, म्, यह तीनों' अक्षर समुदाय (ओ३म्) बन जाता है ।।
इस एक नाम में ही ईश्वर के बहुत नाम आ जाते हैं
और गुण अनन्त भी इसी ओ३म् में अपना आश्रय पाते हैं ।।१।।

(जैसे अकार से) —
इक है - विराट्, औ 'अग्नि' तथा 'विश्वादि' एक त्रिक यह पावन।
दूसा उकार से ब्रह्म 'हिरण्यगर्भ,' 'वायु' तेजस् (आदि) पावन ।
'ईश्वर,' 'आदित्य' और 'प्रज्ञादि' उकार वर्ण से होता है।
पर इन सब नामों का वाचक-ग्राहक ईश्वर ही होता है ।।२।।
वेदादि सत्य शास्त्रों में ऐसा ही स्पष्ट लिखा मिलता है ।
प्रकरण अनुसार किन्तु सबका सम्बोधन भिन्न-भिन्न होता ।
पर सभी नाम परमेश्वर के समुदाय ओ३म् में आ जाते ।
यह ही है सत्य सदा ऐसा ही वेद-शास्त्र, दर्शन गाते ।।३।।

२.प्रश्न- दोहा - परमेश्वर से भिन्न क्या, इन शब्दों के अर्थ ।
और न हो सकते कहीं ? तो विवाद क्यों व्यर्थ ।।१।।

छन्द :- ब्रह्माण्ड, पृथिवी, भूतगण इन्द्रादि देव तमाम हैं ।
औषधि, वनस्पति आदि के भी इस तरह के नाम हैं ।।
जिनके कि होते इस तरह के और नाम अनेक हैं ।
उनको ग्रहण करते नहीं क्यों, ठानते निज टेक हैं ।।४।।

उत्तर – हैं नाम इनके भी अवसि, पर ब्रह्म के भी नाम हैं ।
हैं ब्रह्म-नाम अनन्त पावन ''ओ३म्'' पर निज नाम हैं ।

३.प्रश्न- फिर ग्रहण करते क्यों न उनको जो बहुत से नाम हैं।
भवदीय कथनों के मुताबिक यदि सुखद सुखधाम हैं ?।।५।।
फिर मात्र देवों का ग्रहण करते नहीं क्यों आप हैं ?

उत्तर – कोई प्रमाण न है, अतः यह मात्र एक प्रलाप है ।।

४.प्रश्न- क्यों ? देव सर्व प्रसिद्ध हैं सब और उत्तम भी महा ।
इस हेतु करता हूँ ग्रहण मैं, अधिक क्या जाये कहा ।।६।।

उत्तर – यह है नितान्त अलीक मत जो आप हमसे कह रहे ।
ईश्वर न क्या सुप्रसिद्ध है ? अज्ञान में क्यों रह रहे ।।
फिर नाम ये सब क्यों नहीं हो मानते जगदीश के ।
जब ईश स्वयं प्रसिद्ध है, उत्तम न कोई ईश से ।।७।।

यह कथन मिथ्या आप का मुझको नहीं स्वीकार है ।
हैं दोष इसमें बहुत से तब तर्क सब बेकार है ।।
जो हो उपस्थित छोड़ उसको अन्य हित जो दौड़ता ।
होता परिश्रम व्यर्थ उसका, मूर्ख जो मन मोड़ता ।।८।।

उपस्थितं परित्यज्यानुपस्थितं याचत इति ।।
जो प्राप्त भोजन छोड़कर अप्राप्त हित झंखे खड़ा ।
उसको न कहते हैं विवेकी, मूर्ख वह निश्चय बड़ा ।।
अतएव जैसे वह पुरुष माना विबुध नहिं जायगा ।
तैसे तुम्हारा कथन भी, निश्चय न आश्रय पायेगा ।।९।।

क्यों आप तजते ब्रह्म के जो नाम जगत् प्रसिद्ध हैं ।
देवादि को करते ग्रहण जिनके प्रमाण निषिद्ध हैं ।
जैसा जहाँ प्रकरण रहे वह ग्रहण करना योग्य है ।
जिसका प्रमाण न है कहीं वह त्याज्य और अयोग्य है ।।१०।।

जैसे किसी ने किसी से कहा ''हे भृत्य त्वं सैन्धवमानय''
(अर्थात् सैन्धव ले आओ)
तब भृत्य को उस समय प्रकरण देख करना चाहिए
यात्रा समय में अश्व, भोजन समय सैन्धव चाहिए ।
है उभय वाचक शब्द ''सैन्धव'' नोन औ घोड़ा (बड़ा) ।

भोजन-समय दे नोन, यात्रा पर करे घोड़ा खड़ा ॥११॥

यदि करे दास अनर्थ तो स्वामी अवसि ही क्रुद्ध हो ।
निर्बुद्धि कह डांटे उसे, यदि कार्य नियम विरुद्ध हो ॥
अतएव अवसर देख कर ही अर्थ करना चाहिए ।
हो अन्यथा उपहास उसका, ध्यान रखना चाहिए ॥१२॥
इससे हुआ यह सिद्ध कि जब जो जहां पर उचित हो ।
तैसा लगाये अर्थ प्रकरण देख जैसा उचित हो ॥
इस हेतु ऐसा ही हमें औ आप को भी उचित है ।
सब लोग भी मानें वही, जो अर्थ जैसा उचित है ॥१३॥

ओ३म खम्ब्रह्म ॥१॥ यजुर्वेद अध्याय ४० मं० १७
देखिए वेदों में ऐसे-ऐसे प्रकरणों में 'ओम्' आदि परमेश्वर के नाम हैं॥
(महर्षि दयानन्द)

ओमित्येतदक्षरमुदगीथमुपासीत ॥२॥ शं० ३०-१-११
ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानम् ॥३॥ माण्डूक्यमं०१
सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति ।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति, तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत् ॥४॥
कठो॰वल्ली २। मं० १५॥

प्रशासितारं सर्वेषामणीयां समणोरपि।
रुक्माभं स्वप्नधीगम्यं विद्यात्तं पुरुषं परम् ॥५॥

एतमग्निं वदन्त्येके मनु मन्ये प्रजापतिम् ।
इन्द्रमेके परे प्राणमपरे ब्रह्म शाश्वतम् ॥६॥
मनुस्मृति १२/१२२,१२३

स ब्रह्मा, स विष्णुः स रुद्रस्य शिवोस्सोऽक्ष रस्य परमः स्वराट् ।
स इन्द्रस्य कालाग्निस्य चन्द्रमा ॥७॥ कैवल्योपनिषद॥
इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यस्स सुपर्णो गरुत्मान ।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्याग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥८॥
ऋग्वेद मं० १ सू० १६४ मं० ४६

भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्यधर्त्री ।
पृथिवीं यच्छ पृथिवी दृँऽह पृथिवीं मा हिऽसी।९॥
यजुर्वेद अ० १३ मं० १८

इन्द्रो महना रोदसीपप्रथच्छव इन्द्र सूर्य मरोचयेत् ।
इन्द्रे ह विश्वा भुवनानियेमिरे इन्द्रे स्वानस इन्दवः ॥१०॥
सामवेद उत्तरार्चिक प्रपाठक ७ त्रि० ८ मं० २

(शेष पृष्ठ १९ पर)

"शिक्षित माता मही समान उदार"

– डॉ० अशोक आर्य

वेद में माता को निर्माता कहा गया है । इसका भाव यह है कि जो संतानों के निर्माण का कार्य करें, उसे माता कहते हैं । इससे यह तथ्य सामने आता है कि जो निर्माण के कार्यों के सम्बन्ध में जानती हो, जो जानती हो कि किस विधि के प्रयोग से मानव का उत्तम निर्माण किया जा सकता है, क्या ढंग अपनाया जा सके कि मानव में उत्तम गुणों का आधान हो, वह कौन से ढंग से बालकों को शिक्षित करे कि बालक में अच्छे गुणों का विकास हो ? एक अध्यापक जो बालकों को शिक्षित करता है, वह इससे पूर्व वर्षों के तप से स्वयं को तैयार करता है, स्वयं में वह सब गुण पैदा करता है, जिन गुणों का आधान उसने अपने शिष्यों में करना होता है । जब एक अध्यापक को बालक को शिक्षा देने के लिए स्वयं को शिक्षित करता होता है तो माता के लिए अपने में यह सब गुण पैदा करना भी आवश्यक होता है । इसलिए वेद ने स्त्री शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया है ।

इस सम्बन्ध में वेद उपदेश कर रहा है कि –

सरस्वतीं देवयन्तों हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।

सरस्वतीं सुकृतो अहवयंत सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् ।। ऋग्वेद १०.१७.७।।

इस मन्त्र के माध्यम से स्त्री के लिए चार उपदेश दिए गए हैं । मन्त्र उपदेश करते हुए कह रहा है कि –

१. कर्तव्यार्थ प्रोत्साहन –

जीवन में अनेक अवसर इस प्रकार के आते हैं कि पुरुष में हीनता की भावना का उदय होता है, जिससे वह स्वयं को दुर्बल अनुभव करने लगता है । उसके मन की यह दुर्बलता उसे आगे बढ़ने से, उन्नति करने से, प्रगति पथ पर बढ़ने से रोक देती है । उस मानव के हृदयों से हीनता के भावों के राज्य का नाश करने से नारी आगे आवे । इस समय यह सुशिक्षित देवी, यह सुशिक्षित नारी अदिति का रूप धारण कर लेती है । अदिति का कार्य ही दुर्बलताओं को दूर करना है । यह देवी सब प्रकार की दुर्बलताओं से युक्त भावनाओं को दूर कर शक्ति देने वाली होती है । इसलिए अदिति देवी के घर में यह स्त्री न केवल अपने ही पति की दुर्बलताओं को दूर कर उसमें एक विशेष प्रकार का साहस पैदा कर उसमें अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करती है अपितु अपने अन्य सम्बन्धियों अर्थात् समाज के विभिन्न प्राणियों में भी साहस का आधान कर उन्हें कर्तव्यों की पूर्ति के लिए भी प्रोत्साहित करती है ।

२. मही समान उदार :-

अनेक बार इस प्रकार की अवस्थाएँ आती है जब पुरुष स्वार्थी बन जाता है । उसके अन्दर के संकुचित विचार, उसकी विचारधारा को भी संकुचित बना देते हैं । इन संकुचित विचारों से ही उसमें स्वार्थ का उदय होता है । अब वह जो भी सोचता है, जो भी विचारता है, वह सब स्वार्थ से लबालब

भरा होता है । जब उसकी स्त्री, उसकी माता, उसकी बहिन को, उसकी इस अवस्था का ज्ञान हो जाता है तो वह मही का रूप धारणकर लेती है । मही का अभिप्रायः पृथ्वी से होता है । अर्थात् अब उसे समझाया जाता है कि उसे भी पृथ्वी के से गुण अपने आप में धारण करने चाहिये । पृथ्वी जिस प्रकार अपने अन्दर से अनेक प्रकार के अनाज, फल फूल व औषध आदि देकर मानव मात्र ही नहीं अपितु प्रत्येक प्राणी के जीवन का अपने इस दान से उपकार करती है । इस प्रकार यह सुशिक्षित देवी भी महि बनकर उस मानव में उदार भावों का प्रवेश करने का कार्य करती है ।

३. बहुश्रुता :-

सुशिक्षित स्त्री सदा ही सब पर अत्यधिक उपकार करने वाली होती है । जब उस का पति उत्साह रहित हो जाता है, तो वह उसे ऊपर उठाने के लिए, उसमें नवचेतना, नया उत्साह पैदा करने के लिए, वह उसे वेदादि सत्य शास्त्रों की गाथाएँ सुना कर, इस प्रकार के ही अन्य ग्रंथों की उपयोगी चर्चाओं को सुना कर उसे बहुश्रुता बना कर, इस प्रकार की उसकी प्रसिद्धि करने का कार्य करती है । जिससे संसार में उसका यशस्वी नाम सर्वत्र चर्चा में आने लगता है तथा उसमें नए उत्साह का प्रवाह होता है।

४. पुण्य व धर्मोपदेश :-

सुशिक्षित स्त्री अपने पति, संतान व समाज को सुपथ पर लाने के लिए अनेक कार्य करती है । वह सदा यह ही चाहती है कि उसके परिजन सदा पुण्य पथ के ही पथिक हों । वह सदा इन सबको पुण्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने के साथ ही साथ समग्र समाज को भी धर्म का मार्ग अपनाने का आह्वान करती है ।

आज की अवस्था इससे भिन्न हो गई है । महर्षि दयानंद तथा उसके द्वारा स्थापित आर्य समाज के अथक प्रयास के परिणाम स्वरूप आज स्त्री शिक्षा का सर्वत्र बोलबाला है । प्रायः सब नारियाँ उच्च शिक्षित हो गई हैं किन्तु उनकी यह शिक्षा समाज के किसी काम नहीं आ रही । आज की नारी की शिक्षा में वैदिक शिक्षा का अभाव ही इसका कारण है । वेद की शिक्षा के अभाव के कारण आज की शिक्षित नारी ने अपने आप को अपने अधिकारों तक ही सीमित कर लिया है, उसे अपने कार्यों का, अपने कर्तव्यों का कुछ भी ज्ञान नहीं रहा है । इस कारण वह स्वार्थ से सराबोर हो गयी है । यह ही कारण है कि वेद के मंत्रों के माध्यम से परमपिता परमात्मा ने स्त्री शिक्षा के जिन उच्च आदर्शों का वर्णन किया है, खेद की बात है कि आज की नारी में इन आदर्शों को अपनाने की इच्छा ही नहीं है । जब तक आज की नारी वेद की शिक्षा के अनुरूप नहीं चलेगी तब तक देश, धर्म व जाति का नाश ही होता जावेगा। इसलिए आज की नारी को वेद की शिक्षाओं पर चलना होगा ।

१०४, शिप्रा अपार्टमेन्ट
कौशाम्बी-२०१०१०
गाजियाबाद
मो० ०९७१८५२८०६८

—०—

गायत्री-मन्त्र

– मृदुला अग्रवाल

''ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।''

''गायत्री-मन्त्र'' चारों वेदों की आत्मा है । वेदों में इसे ''वेदमाता'' भी कहा गया है । चारों वेदों के हजारों मन्त्रों में गायत्री-मन्त्र सर्वश्रेष्ठ है । यह परमात्मा का गुणगान कर उनकी प्रशंसा करता है । इसे ''सावित्री-मन्त्र'' भी कहा जाता है । उपनयन के समय ब्रह्मचारी को आचार्य इसी सावित्री-मन्त्र से उपदेश करते हैं । यह मन्त्र उनके शिष्यों के प्राणों की रक्षा करता है । गायत्री-मन्त्री में २४ अक्षर हैं । आठ-आठ अक्षरों के तीन पद हैं । इनका वर्णन बृहदारण्यक उपनिषद में विस्तृत रूप से किया गया है । गायत्री-मन्त्र का ध्यान एवं उच्चारण करने से हम सब बुराईयों से दूर हो जाते हैं । अगर हम गायत्री-मन्त्र को अपने मन में पूर्णरूप से आत्मसात कर लेवें तो प्रभु अपनी सर्वस्व चमकती हुई प्रभा से हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित अवश्य करते हैं ।

गायत्री-मन्त्र की शक्ति के सम्बन्ध में श्री ओमप्रकाश बजाज (मध्य-प्रदेश) ने ''वैदिक-संसार'' पत्रिका (जून २०१६) में लिखा है कि अमरीकी वैज्ञानिक डॉ० हावर्ड स्टीनजेरिल ने विश्वभर के सभी धर्मों के मन्त्र, भजन, प्रार्थना-सूत्रों का संकलन करके, उनका ''शरीर-विज्ञान प्रयोगशाला'' (Physiology Laboratory) में प्रभाव परीक्षण किया । वैज्ञानिक आधार पर हमारा ''गायत्री-मन्त्र'' सर्वाधिक प्रभावशाली एवं लाभप्रद सिद्ध हुआ ।

''गायत्री-मन्त्र'' के प्रत्येक शब्दों की व्याख्या या अर्थ :—

''ओ३म्'' ''प्रणव'' — सर्वव्यापक Omni present सबका रक्षक all protecting ''ओ३म्'' ईश्वर का सर्वोत्तम नाम है । क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक ओ३म् समुदाय हुआ है, इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं — जैसे अकार से विराट, अग्नि और विश्वादि । उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि । मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है । उसका ऐसा ही वेदादि सत्यशास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर के ही हैं । —सत्यार्थ प्रकाश, प्रथम समुल्लास ॥

ऊँ के अतिरिक्त बाकी जितने नाम हैं वे सब 'ऊ' के ही विशेषण हैं, जो उसके सद्‌गुणों का बखान करते रहते हैं, इसीलिये इसको सर्वगुणों का धाम भी कहते हैं । गीता, अध्याय-७, श्लोक-८ में श्रीकृष्ण ने कहा भी है, ''सर्ववेदेषु प्रणवः'' अर्थात् मैं सम्पूर्ण वेदों में ''ओंकार'' हूँ । ओंकार नाम से परमात्मा का ग्रहण होता है ।

''हिरण्ययेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।

योऽसावदित्ये पुरूषः सोऽसावहम् ।। ओ३म् खं ब्रह्म ।।'' —यजुर्वेद, अध्याय-४०,मन्त्र-१७॥

भावार्थ :- ''सब मनुष्यों के प्रति ईश्वर उपदेश करता है कि हे मनुष्यों ! जो मैं यहाँ हूँ वही अन्यत्र सूर्यादि लोक में जो अन्य स्थान सूर्यादि लोक में हूँ वही यहाँ हूँ सर्वत्र परिपूर्ण आकाश के तुल्य व्यापक मुझसे भिन्न कोई बड़ा नहीं, मैं ही सबसे बड़ा हूँ ।'' मेरे सुलक्षणों से युक्त पुत्र के तुल्य प्राणों से प्यारा

मेरा निज नाम ओ३म् यह है । जो मेरा प्रेम और सत्याचरण से शरण लेता है अन्तर्यामीरूप से मैं उसकी अविद्या का विनाश कर उसके आत्मा का प्रकाश करके शुभ गुण कर्म स्वभाव वाला कर सत्यस्वरूप का आवरण स्थिर कर योग से हुए विज्ञान को दे और सब दुःखों से अलग करके मोक्ष सुख को प्राप्त कराता हूँ । ईश्वर ही ऊँ है । 'ऊँ' शब्द से आत्मा को सत्यबोध होता है । ऊँ अविनाशी है कभी नष्ट नहीं होता । सारे वेद, धर्मानुष्ठान करने वाले तपस्वी, ब्रह्मचारी आदि जिसकी प्राप्ति की इच्छा करते हैं, उसका नाम ऊँ है । गीता, अध्याय-८, श्लोक-११ एवं १३ के अनुसार भी — वेद के जानने वाले विद्वान् सच्चिदानन्दघन परमपद को ओंकार नाम से कहते हैं । जो पुरूष ऊ ऐसे एक अक्षर रूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थ स्वरूप परमात्मा का चिन्तन करता हुआ शरीर को त्यागता है वह पुरूष परमगति को प्राप्त होता है ।

''भूः'' — प्राणदाता, Creator of human beings and other beings. सब प्राणियों को जीवन प्रदान करने वाला, प्राणों का प्राण, प्राण-विधाता है । सबके प्राणों की रक्षा-हेतु अन्न एवं औषधि आदि निर्मित करने वाला परमेश्वर ही होता है । यजुर्वेद, अध्याय-४०, मन्त्र-१७ में जो सूर्य में भी व्यापक पुरूष अर्थात् परमात्मा का निज नाम ''ऊँ'' बताया है, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे गायत्री-मन्त्र का देवता सविता भी है एवं सविता का अर्थ सूर्य भी होता है और उसी सूर्य को परमात्मा ने ही निर्मित किया है, इसीलिये सूर्य की धूप का विधिवत् सेवन करने से दुर्गन्धादि जनित दुष्ट जन्तु रोगकारकों के दोषों को भून डाला जाता है । सूर्य की धूप और प्रकाश से निद्रा, आलस्यादि तमोगुण के कार्यों का नाश भी होता है । सूर्य द्वारा वर्षा और यवगोधूमादि औषधि और वट पिप्पनादि वनस्पति उगते हैं जिनसे अन्न होता है । अन्न हमारे प्राणों की रक्षा करने में कितना आवश्यक है यह हम सभी जानते हैं । यह सारा वृतान्त सामवेद, मन्त्र-१४६२ के अनुसार भी है ।

परमात्मा का स्मरण रूपी पुष्प हमारे प्राणों को सुगन्धित करता है । हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हमारे प्राणों को निज शरण में लीजिए ।

''भूरिति वै प्राणः'' ''यः प्राणयति चराडचरं जगत् स भूः स्वयंभूरीश्वरः'' अर्थात् जो सब जगत् के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयम्भू है उस प्राण का वाचक होके ''भूः'' परमेश्वर का नाम है । —सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास-३।।

''भुवः''—दुःखहर्त्ता Destroyer of miseries, सब दुःखों एवं क्लेशों से हमें छुड़ानेवाला । हमारे पापों को हर लेने वाला । संसार में तीन प्रकार के दुःख हैं :—

१) आध्यात्मिक = जो आत्मा एवं शरीर में अविद्या, राग-द्वेष, मूर्खता और ज्वर पीड़ादि से होते हैं ।

२) आधिभौतिक = जो शत्रु, व्याघ्र और सर्पादि से प्राप्त होता है । और

३) आधिदैविक = जो अतिवृष्टि, अतिशीत, अति उष्णता, मन और इन्द्रियों की अशान्ति से होता है । ''भुवः'' इन तीनों प्रकार के क्लेशों और दुःखों को दूर करके हमें कल्याणकारक कर्मों में सदा प्रवृत्त करता है । पराधीनता से दुःखों की प्राप्ति होती है, इसलिये ''भुवः'' हमें स्वाधीनता प्रदान करता है, जिससे हमें सुख मिलता है । ऐहिक दुःखों में अविचलित रहना सिखाता है । ''भुवरित्यपानः'' ''यः सर्वं दुःखमपानयति सोडपानः'' जो सब दुखों से रहित, जिसके संग से जीव सब दुःखों से छूट जाते हैं इसलिये उस परमेश्वर का नाम ''भुवः'' है । —सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास-३।।

''स्वः''=सुखकर्त्ता, स्वयं सुखस्वरूप एवं सबको सुख देनेवाला।

Full of delight and gives delight to his devotees, giver of peace and bliss, अपने उपासकों को सुख प्रदान करता है। ''यो मोदयति स देवः'', जो स्वयं आनन्दस्वरूप है और दूसरों को आनन्द देता है। सबके मन को आन्तरिक शान्ति प्रदान करता है। शान्त मन ही अपेक्षाकृत तेजस्वी मेधा प्रदान करती है। किसी भी दुःख से विचलित नहीं होता एवं मनुष्य का आध्यात्मिक विकास करता है। मनुष्य दिव्यगुणों की प्राप्ति के लिये ज्ञानस्वरूप परमेश्वर का ध्यान करता है। सर्वोपरि विराजमान, मनन योग्य वह परमेश्वर सर्वव्यापक होकर स्थित है। उस प्रकाश स्वरूप का बल सर्वत्र प्रकाशमान है। वह ही महान् देव अज्ञान अन्धकार से हमें बचाता है। ''स्वरिति व्यानः'' ''यो विविधं जगद् व्यानयति व्याप्नोति स व्यानः'' जो नानाविध जगत् में व्यापक होकर, सबको धारण करता है इसलिये उस परमेश्वर का नाम ''स्वः'' है। —सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास-३॥

छान्दोग्योपनिषद् में इन तीनों 'भूः', 'भुवः', 'स्वः' का अर्थ अस्ति, भाति और प्रीति है अर्थात् Being, Becoming, Bliss ये तीन महाव्याहृति कहलाती है। सब वेदों में गायत्री-मन्त्र व्याहृति समेत नहीं है, सिर्फ यजुर्वेद, अध्याय-३६, मन्त्र-३ में यह तीनों व्याहृतियों के साथ है, यजुर्वेद के इस मन्त्र का भावार्थ :- ''जो मनुष्य कर्म, उपासना और ज्ञान सम्बन्धिनी विद्याओं का सम्यक् ग्रहण कर आत्मा को युक्त करते हैं तथा अधर्म, अनैश्वर्य और दुःखरूप मलों को छुड़ाकर धर्म, ऐश्वर्य और सुखों को प्राप्त होते हैं, उनको अन्तर्यामी जगदीश्वर आप ही धर्म के अनुष्ठान और अधर्म का त्याग कराने को सदैव चाहता है।''

''तत्'' =वह, आप, उसी परमात्मा के स्वरूप को हमलोग।

''सवितुः'' =सब जगत् का उत्पादक (उत्पन्नकर्त्ता) है। Creator of the World, गीता, अध्याय-१०, श्लोक-८ में श्रीकृष्ण कहते हैं कि ''मैं सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति का कारण हूँ।'' सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक, the illuminator of all the luminous bodies like the sun. ''यः सुनोत्युत्पादयति सर्वं जगत् स सविता तस्य'' सकल ऐश्वर्ययुक्त जगत् का उत्पादक एवं निर्माता। —सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास-३॥

''वरेण्यम्'' =ग्रहण और ध्यान करने योग्य, अतिश्रेष्ठ, वरण करने योग्य, प्राप्त होने योग्य, The best to become one with Him.,

'वर्त्तुमर्हम्' उस परमात्मा का जो स्वीकार करने योग्य हो, अतिश्रेष्ठ हो।

''भर्गः'' =तेजस्वरूप, परमात्मा का शुद्ध, पवित्र करने वाला चेतन ब्रह्मस्वरूप, The pure and most predominating power of god, जिस पूर्ण शुद्ध स्वरूप भक्त लोग ध्यान करते हैं। विकारों (षट्-विकार) को भस्म करने वाला, अविद्यादि दुःखदायक विघ्नों एवं पापरूपी दुःखों के मूल को नष्ट करने वाला। Burner of the Sinful activities of human beings.

पंडित तुलसीराम स्वामीकृत सामवेद, मन्त्र-१४६२ (गायत्री-मन्त्र) के अनुसार 'भर्गः' शब्द से अन्न का ग्रहण जानिये। सूर्य द्वारा वर्षा, औषधि एवं वनस्पति उगते हैं जिनसे अन्न होता है। इसलिये भी सूर्यजनित अन्न का विधिपूर्वक धारण, सेवन करना इस मन्त्र का उपदेश है।

''देवस्य'' =देवों के देव Supreme god. आत्माओं के प्रकाशक, समग्र ऐश्वर्य के दाता, the

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य समाज कलकत्ता के प्रकाशन

पुस्तक विक्रेता, आर्य संस्थाओं, उपदेशकों को ४० प्रतिशत की छूट दी जाती है।

पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
१. युग निर्माता सत्यार्थ प्रकाश-संदर्भ दर्पण (ऐतिहासिक संदर्भ में सत्यार्थ प्रकाश की यात्रा का दस्तावेज)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	७०.००
२. स्वामी दयानन्द का राजनीति दर्शन (स्वामी दयानन्द के राजनीत दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन)	डॉ० लाल साहेब सिंह	५०.००
३. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज की देन (उन्नीस उत्कृष्ट निबंधों का संग्रह)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय द्वारा सम्पादित	१५.००
४. त्रैतवाद का उद्भव और विकास (त्रैतवाद का उसके उद्भव और विकास के वैशिष्ट्य को स्पष्ट करने वाला दर्शन का शोधपूर्ण ग्रंथ)	डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री	२०.००
५. उपनिषद् रहस्य (ईश केन और प्रश्न उपनिषदों की सारगर्भित व्याख्या)	महात्मा नारायण स्वामी ''सरस्वती''	२०.००
६. श्री श्री दयानन्द चरित	श्री सत्यबन्धुदास	१०.००
७. महर्षि दयानन्द की देन (निबन्धों का संग्रह)	आर्यसमाज कलकत्ता द्वारा प्रकाशित	३०.००
८. धर्मवीर पं० लेखराम	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती	५०.००
९. आनन्द संग्रह (स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज के उपदेशामृत)	वीतराग स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज	२५.००
१०. भाई परमानन्द (बलिदानी वंश के कुलदीपक की अमर कहानी)	श्री बनारसी सिंह	१०.००
११. धर्म का आदि स्रोत	पं० गंगाप्रसाद जी	३०.००
१२. संकल्प सिद्धि (विचारों के संकल्प विकल्प का अनोखा चिन्तन)	स्वामी ज्ञानाश्रम	३०.००
१३. ज्योतिर्मय (श्रीयुत् टी. एल. वास्वानी द्वारा लिखित (Torch Bearer)) का हिन्दी अनुवाद	टी॰एल॰ वास्वानी	३०.००
१४. वेद-वैभव	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१५०.००
१५. कर्मकाण्ड	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१०.००
१६. स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का योगदान	ले० सत्यप्रिय शास्त्री	५०.००
१७. आर्यसमाज कलकत्ता का इतिहास	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	८०.००
१८. मेरे पिता	इन्द्र विद्यावाचस्पति	[illegible]
१९. वेद और स्वामी दयानन्द	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	[illegible]
२०. व्यतीत के यश की धरोहर (महासम्मेलनों के संस्मरणात्मक आकलन)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	६०.०९
२१. Torch Bearer	टी० एल० वास्वानी	३५.००
२२. पं० गुरुदत्त लेखावली	मुनिवर पं० गुरुदत्तजी 'विद्यार्थी'	२५.००
२३. प्रार्थना प्रवचन	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	५०.००
२४. सन्ध्यारहस्य एवं संन्ध्या अष्टांग योग	प्रो० चमूपति एवं स्व० आत्मानन्द (एक जिल्द)	३०.००
२५. बंगाल शास्त्रार्थ	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	४०.००
२६. वेद में गोरक्षा या गोवध	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	५.००
२७. वेद रहस्य	महात्मा नारायण स्वामी जी	३५.००
२८. वेद वन्दन	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१६०.००
२९. राज प्रजाधर्म प्रबोधभाष्य	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	७०.००
३०. वेद-वीथिका	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१६०.००

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल द्वारा प्रकाशित
तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित । मो. : ९८३०३७०४६३